ये अव्यक्त इशारे

जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव करने के लिए बन्धनों से मुक्त बनो

13-09-2023

जैसे बाप शरीर का लोन लेते हैं, बंधन में नहीं आते, जब चाहे आयें, जब चाहे चलें जायें, निर्बन्धन हैं। ऐसे आप बच्चे भी शरीर के, संस्कारों के, स्वभाव के बंधनों से मुक्त बनो। जब चाहें, जैसे चाहें वैसे संस्कार बना लो। जैसे देह को चलाने चाहें वैसे चलाओ। जैसा स्वभाव बनाने चाहो वैसा बना लो। ऐसा नहीं कहो कि मेरा स्वभाव, मेरा संस्कार ही ऐसा है, क्या करूँ! अब इससे भी मुक्त बनो।

In order to experience the stage of liberation-in-life become free from bondage.

Just as the Father takes the loan of the body and does not come into bondage - He comes when He wants and goes away when He wants, He is free from bondage - in the same way, you children also have to become free from the bondages of the body, sanskars and nature. Create whatever sanskars you want, whenever you want, make the body function however you want, create whatever nature you want. Do not say: "My nature is like that, my sanskar is like that. What can I do?" Now become free from this too.